सामुदायिक रेडियो का अंतर्वस्तु विश्लेषण व प्रस्तुति विधाओं का अध्ययन

(बुंदेलखंड रेडियो के विशेष संदर्भ में)

▫ शिवेन्द्र मिश्रा

सारांश :- **प्रस्तुत अध्ययन सामुदायिक रेडियो के विषयवस्तु विश्लेषण पर आधारित है। बुंदेलखंड सामुदायिक रेडियो का प्रसारण झांसी व टीकमगढ़ के ग्रामीण अंचलों में किया जाता है। सामुदायिक रेडियो की विषयवस्तु ग्रामीण विकास पर केन्द्रित होने के साथ समुदाय की सहभागिता पर केन्द्रित होती है। विभिन्न विषय जैसे जलवायु परिवर्तन, कृषि स्वास्थ्य व पोषण, साफ-सफाई, समुदाय जागरुकता, कृषि विकास, प्रशासन सहित महिला सशक्तिकरण व सामुदायिक मनोरंजन का प्रसारण किया जाता है। इन विषयों के तहत सखी-सहेली, हम होंगे कामयाब, शुभ कल, खेत खलिहान, राग बुंदेली, डॉक्टर की सलाह, सफर रसोई से सेहत का, बात बुंदेली सर जमीं की। हैलो सहेली, हमारी संस्कृति हमारी विरासत, बात नन्हें दिलों की, कार्यक्रम का प्रसारण किया जाता है। इस अध्ययन में बुंदेलखंड रेडियो द्वारा प्रति सप्ताह प्रसारित होने वाले कार्यक्रम की समयावधि व कार्यक्रम की प्रस्तुति विधाओं का अध्ययन किया गया है।**

महत्वपूर्ण शब्द :- **सामुदायिक रेडियो, कार्यक्रम, कृषि, शिक्षा, रिएलिटी शो।**

प्रस्तावना

रेडियो के संदेश को सुना जाए तो ग्रामीण व जनजाति समुदाय से सबंधित विषय-वस्तु का कम प्रसारण किया जाता है। जिस भाषा का प्रयोग ग्रामीण समाज के लिए किया जाता है। इस पर चंदा कमेटी ने सुझाव दिए कि गाँव में रेडियो तभी सफल होगा जब क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग कर कार्यक्रम का निर्माण किया जाएगा। संचार नीति का भी सुझाव था कि मीडिया को स्थानीय संस्कृति सूचना और भाषा से जुड़ना चाहिए तभी ग्रामीण आवश्यकता पूरी होगी और वहाँ का विकास संभव होगा। ग्रामीण समाज का विकास तभी होगा जब जनसंचार संधान और परम्परागत मीडिया, शिक्षा सूचना व समाजीकरण की भूमिका अधिक निभाए। मीडिया का स्थानीय/संस्कृति और क्षेत्रीय भाषा से जुड़ाव होना चाहिए। स्रोत, संदेश व गन्तव्य के स्तर विकास से जुड़े होंगे तभी ग्रामीण समाज का विकास मीडिया से संभव होगा। रेडियो द्वारा उन्नत बीज, रासायनिक खाद, कीटनाशक, भंडारण, कृषि उपकरण, संकर बीज आदि के बारे में प्रसारण किया जाता है, जिसके कारण रेडियो किसान का मित्र बन चुका है। कृषि के अलावा पशुपालन, डेयरी, गृह उद्योग, गृह व्यवसाय आदि को बढ़ावा रेडियो द्वारा किया जाता है।

श्याामाचरण दुबे ने लिखा है कि ग्रामीण विकास के लिए पाश्चात्य मॉडल का प्रयोग नहीं कर सकते क्योंकि यह मॉडल इस देश की संस्कृति के अनुकूल नहीं है। इसलिए परम्परागत और आधुनिक मॉडल का मिला-जुला

▫ शोध छात्र, जनसंचार, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, सतना (म.प्र.)

स्वरूप होना चाहिए। लोकशिक्षण के क्षेत्र में आकाशवाणी का योगदान ऐतिहासिक माना जा सकता है। पचास-साठ के दशक में आकाशवाणी केन्द्रों ने प्रौढ़ शिक्षा और कामकाजी शिक्षा के प्रसार के लिए अनेक सफल आयोजन किए, जिनमें खेती-बाड़ी, पशुपालन, सहकारिता, ग्राम शिल्प एवं हस्तकलाओं में नई तकनीक के प्रयोग और औद्योगिकता और आर्थिक प्रबंधन जैसी बातों पर बड़े रोचक ढंग से प्रसारित किया जाता था। चौपाल, ग्राम संसार जैसे रेडियो कार्यक्रमों में उत्तर भारत में रमई काका, लोहा सिंह, नंदाजी-मैराजी जैसी रेडियो शख्सियतों को सुनने के लिए न केवल ग्रामवासी लालायित रहते बल्कि शहरों में आकर बसे ग्रामीण परिवारों में भी ग्राम संसार कार्यक्रम उतनी ही तन्मयता से सुना जाता है।

प्रसारण के जनसेवा मॉडल में मनोरंजन और सूचना के साथ शिक्षा भी मुख्य उद्देश्यों में से एक है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 1993 में दिल्ली में 'कन्सोर्टियम फॉर एजुकेशनल कम्यूनिकेशन' की स्थापना की गई इस संस्था का मुख्य उद्देश्य देश में शिक्षा क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरुप संचार प्रणाली का विकास करना है। प्रसारण मीडिया एवं संचार के अन्य साधनों का शैक्षणिक कार्यों में उपयोग और अनुसंधान जैसे कार्य सी. ई.सी. द्वारा किए जा रहे हैं। इस कार्यक्रम को तैयार करने के लिए यूजीसी ने देश के 16 चुने हुए विश्वविद्यालयों में मीडिया रिसर्च सेंटर की स्थापना की है। जहाँ टेलीविजन और मल्टीमीडिया तकनीक से उच्च शिक्षा के कार्यक्रम बनाए जा रहे हैं।

ग्रामीण समुदाय ऐसे अविकसित क्षेत्र हैं, जहाँ परम्परागत संचार व अन्य संचार माध्यमों का स्थान जनसंचार माध्यम ले रहे हैं। सामुदायिक विकास कार्यक्रम के दौरान भी संचार माध्यमों का ग्रामीण विकास के लिए भरपूर उपयोग किया है। समुदाय विकास में संचार के संबद्ध होने पर समुदाय के संदेशों एवं समुदाय के निर्णय प्रक्रिया में निकटता आ जाती है। संचार समस्याओं के समाधान, महत्वपूर्ण सूचनाएँ देने व समुदाय को उपलब्ध संसाधनों व श्रोताओं से जोड़ना, समुदाय की निर्णय प्रक्रिया एवं संयुक्त शक्ति को विकसित करना है- मुख्य रुप से इन प्रकियाओं से जुड़कर सामाजिक ढ़ांचे से भी संबद्ध होता है। सामाजिक परिवर्तन में रेडियो ने प्रेरक भूमिका निभाई है। प्रस्तुत अध्ययन में उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर शोध करने का सार्थक प्रयास किया गया है।

शोध के उद्देश्य

- सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
- सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की प्रस्तुति विधाओं का अध्ययन करना।

साहित्य सामग्री

शोध के क्षेत्र में संबधित सामग्री का अध्ययन एक महत्वपूर्ण चरण है। जिसे साहित्य पुनरावलोकन के नाम से जाना जाता है। यह शोध का एक अनिवार्य चरण है, जिससे शोध कार्य में आसानी होती है। किसी भी शोध कार्य को प्रारंभ करने से पहले या लिखने से पूर्व कार्य के संबंध में पूर्व में हुए शोध कार्यों के परिणामों को जानना आवश्यक होता है।

1.Kishore, Dr.Devesh and Agrawal Rajesh 'An Analytical program content Study of Community Radio Functioning in National Territory of Delhi (2012)

- ❑ इनका अध्ययन दिल्ली में शैक्षणिक संस्थानों से प्रसारित चार सामुदायिक रेडियो पर केन्द्रित है, जिसमें से जामिया रेडियो, डीयू रेडियो, आईआईएमसी रेडियो व जेआइएमएस पर केन्द्रित हैं। इस अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए-
- ❑ जामिया रेडियो द्वारा कुल 24 कार्यक्रम का प्रसारण किया जाता है, जिसमें शिक्षा सबंधित 25 प्रतिशत, सामाजिक विकास संबंधी 25 प्रतिशत, आर्थिक विकास संबंधी 4 प्रतिशत, स्वास्थ्य संबंधी 12.5 प्रतिशत, संस्कृति संबंधी 12.5 प्रतिशत, समुदाय विषय 8.5 प्रतिशत, मनोरंजन 12.5 प्रतिशत है।
- ❑ डीयू रेडियो द्वारा कुल 21 कार्यक्रम का प्रसारण किया जाता है, जिसमे शिक्षा सबंधित 37 प्रतिशत,

सामाजिक विकास संबंधी 24 प्रतिशत, आर्थिक विकास संबंधी 5 प्रतिशत, स्वास्थ्य संबंधी 14 प्रतिशत, संस्कृति संबंधी 10 प्रतिशत, समुदाय विषय 5 प्रतिशत, मनोरंजन 5 प्रतिशत हैं।

- आईआईएमसी रेडियो द्वारा कुल 8 कार्यक्रम का प्रसारण किया जाता है, जिसमें शिक्षा सबंधित 25 प्रतिशत, सामाजिक विकास संबंधी 25 प्रतिशत, आर्थिक विकास संबंधी 12.5 प्रतिशत, स्वास्थ्य संबंधी 12.5 प्रतिशत, संस्कृति संबंधी 12.5%, समुदाय विषय 12.5%, मनोरंजन 0 % हैं।
- जेआईएमएस रेडियो द्वारा कुल 12 कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है, जिसमें शिक्षा सबंधित 8.5 प्रतिशत, सामाजिक विकास संबंधी 24.5 प्रतिशत, आर्थिक विकास संबंधी 8.5 प्रतिशत, स्वास्थ्य संबंधी 8.5%, संस्कृति संबंधी 17%, समुदाय विषय 8.5 प्रतिशत, मनोरंजन 24.5 प्रतिशत हैं।
- सामुदायिक रेडियो के श्रोताओं की मीडिया रुचि अध्ययन में निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सामुदायिक रेडियो की प्रथम वरीयता विषयवस्तु मनोरंजन, दूसरी वरीयता स्वास्थ्य, तृतीय आर्थिक विकास, चतुर्थ सामुदायिक विषय, पंचम शिक्षा जागरुकता हैं।

2- Sharma Arpita and Sharma Adita 'Community Radio: Information Tool in Fisheries (2011)'

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि सामुदायिक रेडियो मछली पालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

- सामुदायिक रेडियो के द्वारा मछली पर्यावरण कारकों के बारे में जानकारी होती है। वहीं मछली की बीमारियों व उनके रोकथाम के साथ ही मछली पालन की जानकारी के प्रमुख स्रोत के रूप में सामुदायिक रेडियो भूमिका निभाता है। सामुदयिक रेडियो मछली पालन के व्यवसाय को प्रोत्साहित करने के उपकरण के रुप में भी मददगार है। सामुदायिक रेडियो द्वारा समय-समय पर मछली पालन से जुड़े उद्यमिता विकास कार्यक्रमों व सरकार की योजनाओं का भी प्रसारण किया जाता है। सामुदायिक रेडियो मछली पालन करने वालों व्यवसायियों के लिए मुख्य सूचना स्रोत है। सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रम भी विधिवत श्रोता केन्द्रित होकर निर्माण किए जाते हैं और समुदाय विकास को बढ़ावा देने वाले होते हैं।

शोध प्रविधि

इस अध्ययन के संचार शोध की अंतर्वस्तु विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। अंतर्वस्तु विश्लेषण

सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रति सप्ताह प्रसारित होने वाली विषयवस्तु
एक सप्ताह में सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों का प्रतिशत

कार्यक्रम	समय(मिनट में)	प्रतिशत
शिक्षा	165	8.4
आध्यात्मिक	150	7.3
महिला	240	12.3
युवा	240	12.3
पर्यावरण	360	18.4
कृषि	360	18.4
लोक संगीत	405	21.4
मनोरंजन	30	1.5
योग	1950	100

संदेशों के अभिप्रेत तथा वास्तविक अर्थों का पता लगाने का भी माध्यम है। इससे संचार की घटनाओं की पृष्ठभूमि का भी पता चलता है। संचार शोध में संदेशों व उन संदेशों को प्रसारित किए जाने, परस्पर बाँटने, प्राप्त करने समझने और उन पर प्रभाव करने के तरीके पर भी गौर किया जाता है। सामुदायिक रेडियो के विषयवस्तु का अध्ययन करने के लिए बुंदेलखंड द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों की सूची का प्रयोग किया गया है। बुंदेलखंड द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों का प्रति सप्ताह 1950 मिनट प्रसारण किया जाता है। इस शोध में बुंदेलखंड द्वारा एक सप्ताह में किए गए कार्यक्रमों का प्रसारण की समयावधि व कार्यक्रमों में प्रयुक्त प्रस्तुति विधाओं का अध्ययन किया गया।

विश्लेषण व व्याख्या

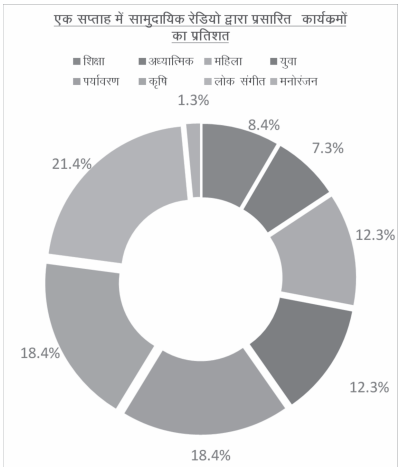

➢ विश्लेषणः प्राप्त आँकड़ों व तथ्यों के आधार पर प्रति सप्ताह कुल 1950 मिनट का कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं, जिसमें शिक्षा 8.4 प्रतिशत, आध्यात्मिक कार्यक्रम 7.3 प्रतिशत, महिला कार्यक्रम 12.3 प्रतिशत, युवाओं पर आधारित 12.3 प्रतिशत, पर्यावरण पर 18.4 प्रतिशत, कृषि पर 18.4 प्रतिशत, लोक संगीत पर 21.4 प्रतिशत व मनोरंजन पर 1.5 प्रतिशत कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है।

प्रस्तुति की विधाएं	संख्या	प्रतिशत
सजीव	7	16.66
वार्ता	4	9.52
वृत्तचित्र	3	7.14
साक्षात्कार	4	9.52
नाटक	2	4.79
रिएलिटी शो	1	2.38
सहभागिता	7	16.66
संगीत	3	7.14
सामुदायिक रिर्पोर्टिंग	5	11.90
फोन–इन प्रोग्राम	6	14.29
कुल योग	42	100

➢ विश्लेषणः सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्राप्त आँकड़ों व तथ्यों के आधार पर सजीव प्रसारण 16.6%, वार्ता 9.52%, वृत्त 7.14%, साक्षात्कार 9.52%, नाटक 4.79%, रिएलिटी शो 2.38%, सहभागिता 16.66%, संगीत 7.

	प्रस्तुति की विधाएं (Modes Of Presentation)									
कार्यक्रम	सजीव	वार्ता	वृत्त	साक्षात्कार	नाटक	रिएलिटी शो	सहभागिता	संगीत	सामुदायिक रिर्पोर्टिंग	फोन–इन प्रोग्राम
सखी सहेली	✓	✓	✓	✓			✓		✓	✓
हम होंगे कामयाब	✓	✓	✓	✓	✓		✓		✓	✓
शुभ कल	✓					✓	✓			
खेत खलियान	✓	✓	✓	✓			✓		✓	✓
संगीत सरिता	✓						✓	✓		✓
बुंदेली फोक	✓							✓		
बुंदेली तराने एसएमएस के बहाने							✓	✓	✓	✓
शिक्षा	✓	✓		✓	✓		✓		✓	✓
कुल योग	7	4	3	4	2	1	7	3	5	6

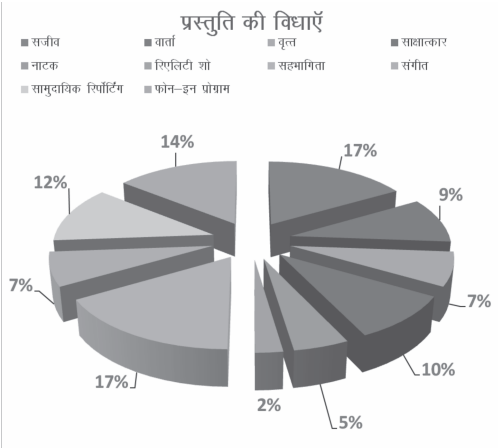

14%, सामुदायिक रिपोर्टिंग 11.90%, फोन इन प्रोग्राम 14.29% किया जाता है।

निष्कर्ष-

- सामुदायिक रेडियो द्वारा श्रोताओं के लोकसंस्कृति से परिचय कराने के लिए सर्वाधिक लोकसंगीत कार्यक्रम का सर्वाधिक प्रसारण किया जाता है।
- सामुदायिक रेडियो द्वारा विकास संचार सबंधित पर्यावरण व कृषि पर कार्यक्रम का प्रसारण किया जाता है। युवा व महिलाओं सशक्तिकरण मुद्दों के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।
- सजीव (लाइव) व श्रोताओं की सहभागिता संबंधी प्रस्तुति विधा का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। हम होंगे कार्यक्रम में सर्वाधिक प्रस्तुति विधाओं का प्रयोग किया जाता है।
- सामुदायिक रेडियो द्वारा रिएलिटी शो प्रस्तुति की नई विधा का प्रयोग किया गया।
- सामुदायिक रेडियो द्वारा कुल 10 प्रस्तुति विधा का प्रयोग किया जाता है।

संदर्भ-

पुस्तक-

- सिंह प्रो. श्याम धर, वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व, 2009 सपना अशोक प्रकाशन वाराणसी, पेज नं. 446-448.
- Fraser Colin and Estrada Restrepo, Community Radio handbook (2001), Published by commonwealth educational media centre forAsia UNESCO
- दुबे श्यामाचरण, विकास का समाजशास्त्र, 2010, वाणी प्रकाशन दिल्ली पेज- 153.

शोध आलेख

- नंदा वर्तिका, (2005), सामुदायिक रेडियो के बीच विकास की गूँज कम्यूनिकेशन टुडे वाल्यूम 18, नं 1 जनवरी-जून, पेज 61-65.
- कुठियाला बी.के., मीडिया (2010) मीडिया मीमांसा अंतर्वस्तु विश्लेषण वर्ष-4 अंक-1, जुलाई सितंबरः एक परिचय पेज 52.
- Shama Dr. Arpita (2016), Community Radio For Empowering Rural woman in Gujrat Information, Communication Today, Vol 18 No 2April-June , page 93-94
- Kishore Devesh , (2012) An Analytical programme content study of Community Radio functioning in National Capital Territory of Delhi, Pragyan "Journal of Mass communication" Vol-10, Issue -1 June.